Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2394-3580 VOLUME - 7 No. : 6 April - 2020

Swadeshi Research Foundation

A MONTHLY JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

Research Journal SRF Book Publication

International Scientific Research Solution

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 4.2

Published by :

Swadeshi Research Foundation & Publication

Seva Path, 320 Sanjeevani Nagar,
Veer Sawarkar Ward, Garha, Jabalpur (M.P.) - 482003

Scanned with Oken Scanner

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	कोरोना का कहर, अर्थव्यवस्था में गिरावट आने वाले दिनों में और अधिक संकट	डॉ. देवेन्द्र विश्वकर्मा	1-10
2	पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र को मानव से ही खतरा	डॉ. रेखा कुमारी	11-20
3	किशोरावस्था : समझने और समझाने की अवस्था	श्रीमति अपर्णा श्रीवास्तव	21-24
4	भारत में धार्मिक तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन	डॉ. अशोक नायक	25-31
5	बिलासपुर जिले के कोटा विकासखण्ड के सर्वेक्षित ग्रामों में अनुसूचित जनजाति की आधारभूत स्थिति के विशेष सन्दर्भ में स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना के योगदान का एक अध्ययन	डॉ. के.के. शर्मा	32-38
6	नाबार्ड की वित्तीय सहायता से मध्यप्रदेश राज्य की कृषि का सकल घरेलू उत्पाद पर प्रभाव का अध्ययन	संजय कुमार डॉ. अशोक कुमार मराठे	39-44

Scanned with Oken Scanner

ISSN : 2394-3580 Swadeshi Research Foundation Vol. 7, No. 6, April 2020
A Monthly Journal of Multidisciplinary
International Peer Refereed, Review, Indexing & Impact Factor - 4.2 Research Journal

किशोरावस्था : समझने और समझाने की अवस्था

श्रीमति अपर्णा श्रीवास्तव
अतिथि सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय, डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

किशोरावस्था :– पश्चिमी विद्वानों ने इसे (टीन एज) भी कहा है। यह वह अवस्था है, जिसमें बालक को नई समस्याओं एवं संवेगों का सामना करना पड़ता है। इस अवस्था में बालक समस्याओं को हल करने के लिए परिपक्वता की ओर उन्मुख होता है तथा मानसिक परिपक्वता के शिखर पर पहुंचने का प्रयत्न करता है, जहां उसे संतुष्टि का अनुभव हो सके।

शिक्षा मनोवैज्ञानिकों ने किशोरावस्था को जो 13 वर्ष की आयु से प्रारंभ होकर 19–20 साल की आयु तक की होती है, एक महत्वपूर्ण अवस्था बताया है। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में किए गए शोधों के परिणामस्वरूप किशोरावस्था को वयस्कता के जीवन की मुख्य अवस्था के रूप में स्वीकार किया गया है तथा अधिकतर मनोवैज्ञानिकों की इस बात पर सहमति है कि – यह अवस्था बाल्यावस्था तथा वयस्कावस्था के बीच पारगमन अवधि होती है जिसे सामान्यतः कई कारणों से तनाव एवं आंधी की अवस्था कहा जाता है। किशोरावस्था बालक में एक नए परिवर्तन का संकेत है जिसमें बालक के शारीरिक मानसिक व सामाजिक गुणों में तेजी से परिवर्तन होता है और यह इन नए परिवर्तनों को समायोजित करने में कठिनाई महसूस करता है तथा तनाव का सामना करता है। किशोरावस्था में आवेगों और संवेगों की अत्याधिक प्रबलता होती है। यही कारण है कि किशोर विभिन्न अवसरों पर विभिन्न प्रकार का व्यवहार करते हैं।

किशोरावस्था : समझने की अवस्था :– किशोरावस्था समझने की अवस्था है, इसमें माता–पिता तथा शिक्षकों को समझना होगा कि किशोरों का जो परिवर्तित व्यवहार है वह उनकी अवस्था की विशेषताएं हैं तथा उनकी विशेषताओं को समझते हुए उनके व्यवहार को समझना चाहिए। किशोरावस्था मानव जीवन की वह अवस्था है, जिसमें मानव परिपक्व होने के लिए प्रयास करता है। परिणामस्वरूप अनेक समस्याओं का

Scanned with Okay Scanner
9/9